Quest Journals
Journal of Research in Humanities and Social Science
Volume 12 ~ Issue 6 (2024) pp: 127-129
ISSN(Online):2321-9467
www.questjournals.org

Research Paper

स्नातक स्तर पर स्मार्टफोन के उच्च उपयोग व निम्न उपयोग करने वाले विद्यार्थियों के सामाजिक व्यवहार का तुलनात्मक अध्ययन

राजेश कुमार गोयल
शोधार्थी, महाराजा गंगासिंह विश्वविद्यालय, बीकानेर

डॉ. मीनाक्षी मिश्रा
प्राचार्या, भारती शिक्षक प्रशिक्षण संस्थान श्रीगंगानगर

सारांश : *प्रस्तुत शोध पत्र में स्नातक स्तर पर स्मार्टफोन के उच्च उपयोग व निम्न उपयोग करने वाले विद्यार्थियों के सामाजिक व्यवहार का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। इस शोध में शोधार्थी ने अनुसंधान की सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया। शोध न्यादर्श का चयन साधारण यादृच्छिक रूप से किया जिसमें स्नातक स्तर के 200 विद्यार्थियों को शामिल किया गया है। प्रदत्त संकलन के लिए डॉ. विजयश्री एवं डॉ. मसूद अंसारी द्वारा निर्मित स्मार्टफोन एडिक्शन स्केल व सामाजिक व्यवहार मापन के लिए स्वनिर्मित मापनी का उपयोग किया गया। अध्ययन के निष्कर्ष में पाया कि स्मार्टफोन के उच्च उपयोग करने वाले व निम्न उपयोग करने वाले विद्यार्थियों के सामाजिक व्यवहार में सार्थक अन्तर है। स्मार्टफोन के उच्च उपयोग करने वाले छात्र व छात्राओं की अपेक्षा निम्न उपयोग करने वाले छात्र व छात्राओं का सामाजिक व्यवहार अच्छा पाया गया है ।*

कुंजी शब्द *– स्नातक स्तर, स्मार्टफोन, सामाजिक व्यवहार*

***R**eceived 05 June, 2024; **R**evised 15 June, 2024; **A**ccepted 17 June, 2024 © The author(s) 2024.*
P**ublished with open access at **www.questjournals.org

प्रस्तावना – प्राचीन समय में मनुष्य घुम्मकड़ जीवन जीता था फिर उसके बाद समूह बनाकर रहने लगा। बाद में अलग–अलग समूह में दूर–दूर रहने लगे जिसके कारण उनको संवाद स्थापित करने में समस्या आने लगी। धीरे–धीरे सूचना तकनीकी के क्षेत्र में अत्यधिक विकास हुआ। 4G व 5G सेवा प्रारम्भ होने तथा फ्री डाटा सर्विस ने आम आदमी की इंटरनेट तक पहुँच को आसान बना दिया । अब आम आदमी अपने सभी कार्य स्मार्टफोन की सहायता से करने लगा और वह स्मार्टफोन का आदी हो गया । मनुष्य ने लोगों से वास्तविक जीवन में मिलना–जुलना कम कर दिया और सोशल मीडिया के माध्यम से जुड़ना प्रारम्भ किया । स्मार्टफोन में ज्यादा व्यस्त होने की वजह से परिवार के लोगों से बातचीत करना भी कम कर दिया । सार्वजनिक स्थानों, धार्मिक कार्यों व सामूहिक गतिविधियों से अपने आप को दूर कर लिया और समाज से दूर होने लगा । वह यह भूल गया कि समाज के माध्यम से ही व्यक्ति का सम्पूर्ण विकास सम्भव है। जब एक बालक जन्म लेता है तो वह सामाजिक दृष्टि से बिल्कुल शून्य होता है, अर्थात उसमें कोई भी सामाजिक गुण नहीं होता है। वह अपने माता–पिता, बड़े बुजुर्गो तथा रिश्तेदारों के सामाजिक व्यवहार से प्रभावित होता है तथा उनके व्यवहार का अनुकरण करता है। इसके बाद जब वह विद्यालय जाने लगता है तो उसका व्यवहार अपने मित्रों तथा शिक्षकों से प्रभावित होता है। इनके अलावा वह समाज के अन्य लोगों के भी सम्पर्क में आता है तो उनसे अन्तःसंबंध रखते हुए धीरे–धीरे सामाजिक प्राणी के रूप में विकसित होता जाता है। बालक से संबंधित सभी सामाजिक संस्थाएँ जैसे– स्कूल, कॉलेज, धर्म, समितियाँ व संगठन उसके व्यवहार को प्रभावित करते है। वर्तमान में इन सभी कारकों के अतिरिक्त सोशल मीड़िया व स्मार्टफोन ने मनुष्य के व्यवहार को बहुत अधिक प्रभावित किया है । अतः यह आवश्यक हो गया कि स्मार्टफोन के अधिक उपयोग से सामाजिक व्यवहार पर पड़ने वाले प्रभाव को जाना जाए और उन प्रभावों से बचने के उपायों पर चर्चा कर लोगों को उनके प्रति जागरूक किया जाए । अतः इसी प्रभाव को जानने के लिए शोधकर्त्ता ने **"स्नातक स्तर पर स्मार्टफोन के उच्च व निम्न उपयोग करने वाले विद्यार्थियों के सामाजिक व्यवहार का तुलनात्मक अध्ययन"** विषय का चयन किया।

अध्ययन के उद्देश्य :– प्रस्तावित शोध कार्य हेतु शोधार्थी द्वारा निम्नलिखित शोध उद्देश्य निर्धारित किए गए हैं–

1. स्नातक स्तर पर स्मार्टफोन के उच्च व निम्न उपयोग करने वाले विद्यार्थियों के सामाजिक व्यवहार का तुलनात्मक अध्ययन करना ।
2. स्नातक स्तर पर स्मार्टफोन के उच्च व निम्न उपयोग करने वाले छात्रों के सामाजिक व्यवहार का तुलनात्मक अध्ययन करना ।
3. स्नातक स्तर पर स्मार्टफोन के उच्च व निम्न उपयोग करने वाली छात्राओं के सामाजिक व्यवहार का तुलनात्मक अध्ययन करना ।

शोध परिकल्पनाएँ :– प्रस्तुत अध्ययन में शोधार्थी द्वारा शून्य परिकल्पना का उपयोग किया गया है जो कि निम्न प्रकार है –

1. स्नातक स्तर पर स्मार्टफोन के उच्च व निम्न उपयोग करने वाले विद्यार्थियों के सामाजिक व्यवहार में कोई सार्थक अन्तर नहीं है ।
2. स्नातक स्तर पर स्मार्टफोन के उच्च व निम्न उपयोग करने वाले छात्रों के सामाजिक व्यवहार में कोई सार्थक अन्तर नहीं है ।
3. स्नातक स्तर पर स्मार्टफोन के उच्च व निम्न उपयोग करने वाली छात्राओं के सामाजिक व्यवहार में कोई सार्थक अन्तर नहीं है ।

अध्ययन विधि :– प्रस्तुत अध्ययन में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है, क्योंकि अनुसंधान की यह एक वैज्ञानिक विधि है। इस विधि द्वारा प्राप्त दत्त वैध एवं विश्वसनीय होते हैं।

न्यादर्श :– प्रस्तावित शोध के उद्देश्यों और साधनों की सीमाओं को ध्यान में रखते हुए न्यादर्श के रूप में दौसा जिले के महाविद्यालयों के 200 छात्र व छात्राओं को लिया गया है ।

उपकरण :- प्रस्तुत अध्ययन में शोधार्थी द्वारा निम्न उपकरणों का उपयोग किया गया है –

1. स्मार्टफोन एडिक्शन स्केल (डॉ. विजयश्री व डॉ. मसूद अंसारी)
2. सामाजिक व्यवहार मापनी (स्वनिर्मित)

शोध में सांख्यिकी :– प्रस्तुत शोध में प्रदत्तों के विश्लेषण के लिए निम्न सांख्यिकी प्रविधियों का प्रयोग किया गया है–

1. मध्यमान (Mean)
2. मानक विचलन (Standard Deviation)
3. टी परीक्षण (T-Test)

विश्लेषण व व्याख्या :–

परिकल्पना 1

स्नातक स्तर पर स्मार्टफोन के उच्च व निम्न उपयोग करने वाले विद्यार्थियों के सामाजिक व्यवहार में कोई सार्थक अन्तर नहीं है ।

तालिका संख्या – 1

न्यादर्श	संख्या	माध्य	मानक विचलन	स्वतंत्रता कोटि	t मान	परिणाम
उच्च उपयोग	100	84.54	5.12	198	18.63	सार्थक अन्तर है
निम्न उपयोग	100	96.7	4.036			

df= (N_1+N_2-2)= 100+100-2 = 198 सार्थकता स्तर 0.05 = 1.96 0.01= 2.58

उक्त सारणी से स्पष्ट है कि स्नातक स्तर पर स्मार्टफोन के उच्च उपयोग करने वाले विद्यार्थियों के सामाजिक व्यवहार का मध्यमान 84.54 व मानक विचलन 5.12 है जबकि निम्न उपयोग करने वाले विद्यार्थियों के सामाजिक व्यवहार का मध्यमान 96.7 व मानक विचलन 4.03 है । स्वतंत्रता कोटि 198 पर दोनों समूहों का t मान 18.63 है जो कि 0.05 तथा 0.01 सार्थकता स्तर पर आवश्यक मान से बहुत अधिक है । अतः कहा जा सकता है कि स्मार्टफोन के उच्च उपयोग व निम्न उपयोग करने वाले विद्यार्थियों के सामाजिक व्यवहार में सार्थक अन्तर है । अतः यह परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है ।

परिकल्पना 2

स्नातक स्तर पर स्मार्टफोन के उच्च व निम्न उपयोग करने वाले छात्रों के सामाजिक व्यवहार में कोई सार्थक अन्तर नहीं है ।

तालिका संख्या – 2

न्यादर्श	संख्या	माध्य	मानक विचलन	स्वतंत्रता कोटि	t मान	परिणाम
उच्च उपयोग	50	84.32	5.30	98	12.15	सार्थक अन्तर है
निम्न उपयोग	50	95.92	4.18			

df= (N_1+N_2-2)= 50+50-2 = 98 सार्थकता स्तर 0.05 = 1.97 0.01= 2.59

उक्त सारणी से स्पष्ट है कि स्नातक स्तर पर स्मार्टफोन के उच्च उपयोग करने वाले छात्रों के सामाजिक व्यवहार का मध्यमान 84.32 व मानक विचलन 5.30 है जबकि निम्न उपयोग करने वाले विद्यार्थियों के सामाजिक व्यवहार का मध्यमान 95.92 व मानक विचलन 4.18 है । स्वतंत्रता कोटि 98 पर दोनों समूहों का t मान 12.15 है जो कि 0.05 तथा 0.01 सार्थकता स्तर पर आवश्यक मान से बहुत अधिक है । अतः कहा जा सकता है कि स्मार्टफोन के उच्च उपयोग व निम्न उपयोग करने वाले छात्रों के सामाजिक व्यवहार में सार्थक अन्तर है । अतः यह परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है ।

परिकल्पना 3

स्नातक स्तर पर स्मार्टफोन के उच्च व निम्न उपयोग करने वाली छात्राओं के सामाजिक व्यवहार में कोई सार्थक अन्तर नहीं है ।

तालिका संख्या – 3

न्यादर्श	संख्या	माध्य	मानक विचलन	स्वतंत्रता कोटि	t मान	परिणाम
उच्च उपयोग	50	85.10	4.97	98	13.69	सार्थक अन्तर है
निम्न उपयोग	50	97.02	3.63			

df= (N_1+N_2-2)= 50+50-2 = 98 सार्थकता स्तर 0.05 = 1.97 0.01= 2.59

उक्त सारणी से स्पष्ट है कि स्नातक स्तर पर स्मार्टफोन के उच्च उपयोग करने वाली छात्राओं के सामाजिक व्यवहार का मध्यमान 85.10 व मानक विचलन 4.97 है जबकि निम्न उपयोग करने वाली छात्राओं के सामाजिक व्यवहार का मध्यमान 97.02 व मानक विचलन 3.63 है । स्वतंत्रता कोटि 98 पर दोनों समूहों का t मान 13.69 है जो कि 0.05 तथा 0.01 सार्थकता स्तर पर आवश्यक मान से बहुत अधिक है । अतः कहा जा सकता है कि स्मार्टफोन के उच्च उपयोग व निम्न उपयोग करने वाली छात्राओं के सामाजिक व्यवहार में सार्थक अन्तर है । अतः यह परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है ।

अध्ययन के निष्कर्ष :-

1. स्मार्टफोन के उच्च उपयोग व निम्न उपयोग करने वाले विद्यार्थियों के सामाजिक व्यवहार में सार्थक अन्तर पाया गया। अर्थात स्मार्टफोन के उच्च उपयोग करने वाले विद्यार्थियों की अपेक्षा निम्न उपयोग करने वाले विद्यार्थियों का सामाजिक व्यवहार अच्छा पाया गया है ।
2. स्मार्टफोन के उच्च उपयोग व निम्न उपयोग करने वाले छात्रों के सामाजिक व्यवहार में सार्थक अन्तर पाया गया अर्थात स्मार्टफोन के उच्च उपयोग करने वाले छात्रों की अपेक्षा निम्न उपयोग करने वाले छात्रों का सामाजिक व्यवहार अच्छा पाया गया है ।
3. स्मार्टफोन के उच्च उपयोग व निम्न उपयोग करने वाली छात्राओं के सामाजिक व्यवहार में सार्थक अन्तर पाया गया । अर्थात स्मार्टफोन के उच्च उपयोग करने वाली छात्राओं की अपेक्षा निम्न उपयोग करने वाली छात्राओं का सामाजिक व्यवहार अच्छा पाया गया है ।

शैक्षिक निहितार्थ :– प्रस्तुत शोध कार्य में स्मार्टफोन के उपयोग के साथ–साथ उसके अधिक उपयोग से होने वाले प्रभावों के बारे में बताया गया है । स्मार्टफोन के अधिक उपयोग से सामाजिक व्यवहार पर पड़ने वाले प्रभाव को स्पष्ट किया है । स्मार्टफोन शैक्षिक क्षेत्र में उपयोगी है जो हमारी बहुत सारी शैक्षिक आवश्यकताओं को आसानी से पूरा कर देता है, जैसे – ऑनलाइन शिक्षण कार्य, ऑनलाइन शिक्षण सामग्री, अनुसंधान कार्य आदि । शैक्षिक वातावरण के साथ–साथ सामाजिक वातावरण पर भी स्मार्टफोन का प्रभाव देखने को मिलता है । वर्तमान में युवावर्ग में सोशल मीड़िया का अधिक चलन है। सोशल मीडिया के माध्यम से विचारों के आदान–प्रदान के साथ–साथ वार्तालाप करने के साथ–साथ विभिन्न समूहों व संगठनों से आसानी से जुड़ना आदि कार्य आसानी से करने लगा है। परन्तु स्मार्टफोन के अधिक उपयोग हमारे व्यवहार व आदतों में परिवर्तन देखने को मिलता है जिससे लोगों के साथ हमारे सामाजिक सम्बन्ध पर भी प्रभावित होते है । सामाजिक जीवन में दूरी हमारे स्वस्थ विकास को अवरूद्ध कर देता है जिसके कारण हमारी दिनचर्या , कार्यक्षमता व व्यवहार बुरी तरह प्रभावित होती है । इस शोध के माध्यम से विद्यार्थी स्मार्टफोन के अधिक उपयोग से होने वाले दुष्प्रभावों को समझकर अपनी दिनचर्या व व्यवहार में परिवर्तन लाकर सकारात्मक शैक्षिक व सामाजिक वातावरण विकसित कर सकेंगे ।

सन्दर्भ सूची :–

1. कपिल, एच.के. (1998), शैक्षिक अनुसंधान विधियाँ, भार्गव बुक हाउस, आगरा
2. गुप्ता,प्रो.एम.एल.; शर्मा, डॉ.डी.डी., सामाजिक अनुसंधान पद्धतियाँ, साहित्य भवन पब्लिकेशन, आगरा
3. कुमारी, डॉ. प्रतिमा ; तिवारी, डॉ. पूनम , सामाजिक व्यवहार का मनोविज्ञान, ठाकुर प्रकाशन , लखनऊ
4. प्रसाद, डॉ. नर्मदेश्वर, मानव व्यवहार तथा सामाजिक व्यवस्थाएँ, बिहार हिन्दी ग्रंथ अकादमी, पटना
5. **कुमार तनुज (2020)** ''उच्च शिक्षा स्तर के छात्रों के शैक्षिक, सामाजिक एवं संवेगात्मक व्यवहार पर छात्रावासीय वातावरण के प्रभाव का अध्ययन''

5- http://allresearchjournal.com

6- http://ncbi.nlm.nih.gov